दिनांक :- 16-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड प्रतिष्ठा इतिहास
प्रथम पत्र

इकाई :- दो - सिंधु घाटी की सभ्यता

एक ईंट पर एक बिल्ली का पीछा करते हुए कुत्ते का पदचिन्ह प्राप्त हुआ।

सौंदर्य प्रसाधन में लिपस्टिक तथा इत्र रखने के बर्तन का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।

यहां की एक मुद्रा पर घड़ियाल तथा दो मछलियों का अंक

यहाँ से वक्राकार ईंटें मिली है।

(6) बनवाली :- यह वर्तमान हरियाणा के हिसार जिले में स्थित है। इसकी खोज 1973 ई० में आर० एस० बिष्ट की थी। यहाँ से प्राक् हड़प्पा तथा विकसित हड़प्पा संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं।

यहां से अच्छे किस्म का जौ प्राप्त हुआ।
तांबे का एक वाणाग्र प्राप्त हुआ है।

Scanned with CamScanner

हल की आकृति का चित्रण प्राप्त हुआ है।
यहाँ के सार्वजनिक व्यवस्था में नाली पद्धति का अभाव है
यहाँ से ताँबे की कुल्हाड़ी मिली है।
सड़कों पर बैलगाड़ी के पहियों के निशान मिले हैं जिस
के पहियों के मध्य की दूरी वर्तमान दूरी के बराबर ही है।
मकानों को मिट्टी से लेपा जाता था।
बनवाली की नगर योजना शतरंज के बिसात या जाल के
आकार की बनायी गयी थी। सड़कें न तो सीधी मिलती
हैं और न ही एक दूसरे को समकोण पर काटती हैं।
बल्कि समांतर चलती हैं।
(7) रोपड़ :- यह स्थल वर्तमान में पंजाब में सतलज नदी
के किनारे स्थित है। इसकी खुदाई 1953-54 में यज्ञदत्त
शर्मा के नेतृत्व में कराई गई थी।
स्वतंत्रा पश्चात सबसे पहले यहीं खुदाई हुई थी
यहाँ से हड़प्पा चरण के साथ चित्रित धूसर मृद्भांड

कुषाण, गुप्त और मध्यकालीन मृद्भांड प्राप्त हुए
यहाँ मानव के साथ कुत्ते के दफनाए जाने का साक्ष्य मिला है।
यहाँ से ताँबे के एक कुल्हाड़ी प्राप्त हुई है।
यहाँ से मात्र एक मुद्रा की प्राप्ति हुई है।

(8) धौलावीरा :- वर्तमान समय में यह स्थल गुजरात में प्रांत के भचाउ जिले में अवस्थित है। सर्वप्रथम इस स्थल की खोज 1967-68 में जगपति जोशी द्वारा की गई तथा उत्खनन का कार्य 1990 में प्रारंभ हुआ।
धौलावीरा का शाब्दिक अर्थ होता है 'सफेद कुआ'।
धौलावीर का आकार आयताकार है। अन्य स्थलों के विपरित यह नगर तीन भागों में विभाजित है - दुर्ग मध्य तथा निचला नगर। तीनों भाग दुर्गीकृत हैं।
यहाँ का जल प्रबंधन विशिष्ट है जिसमें जल की रोक के लिये 16 से ज्यादा जलाशयों का निर्माण किया गया है।

Scanned with CamScanner

यहाँ पर सड़कों एवं गलियों का जल बिछा हुआ है।
पानी के निकास के लिए नाली तथा आपूर्ति के लिये
कुआँ तथा बरसाती पानी के इकट्ठा करने के लिये 12
मीटर का एक गड्ढा तथा 24 मीटर की एक-एक नहर
बनी है।
यहां आयताकार मुहरें ज्यादा मिली हैं जिसपर एक
श्रृंगी पशु का अंकन है।
यहाँ के उत्खनन से गुलाबी रंग के बर्तन प्राप्त हुए है
जिसे पका कर काले रंग की चित्रकारी की गई है। अधि
कांश मृद्भांड चाक निर्मित है परंतु हाथों से भी बर्तन बनाए
जाने के साक्ष्य मिलते है
यहां से मनुष्य तथा पशुओं की मूर्तियां नहीं मिली है।
यहाँ से एक वृहद लेख की प्राप्ति हुई है। विभाजन के
पश्चात यहाँ से 16 विभिन्न आकार प्रकार के जलाशय
मिले है।
धौलावीरा नगर के दुर्ग भाग तथा मध्यम भाग के मध्य
अवस्थित 283x47मी भव्य इमारत के अवशेष मिले है।
इसे स्टेडियम कहा गया है।

हड़प्पा सभ्यता के उद्भव एवं पतन की विश्वसनीय जानकारी हमें धौलावीर से मिलती है जल के स्त्रोत सूखने तथा नदियों की धारा में परिवर्तन से इसका पतन हुआ।
भारत में उत्खनित दूसरा सबसे बड़ा स्थल है।
समपूर्ण सिंधु घाटी सभ्यता में इसका चौथा स्थान है।

(9) सुरकोटड़ा :- वर्तमान गुजरात के कच्छ प्रदेश में स्थित है यहाँ पर उत्खनन का कार्य जगपति जोशी के अधीन 1964 में कराया गया। यहाँ से प्राक् हड़प्पा साक्ष्य नहीं मिला है यह नगर क्षेत्र दो भागों में गढ़ी तथा आवासीय क्षेत्र में विभाजित है। दुर्ग के बाहर तथा अंदर घरों के अतिरिक्त शॉपिंग कॉम्पलेक्स के साक्ष्य मिले हैं।
यहाँ से घोड़े की अस्थियाँ प्राप्त हुई हैं तथा एक अनोखे कब्रगाह की भी प्राप्ति हुई है।
इस स्थल के विनाश का कारण संभवतः भूकंप था।

Scanned with CamScanner

यहाँ से एक मुद्रा की प्राप्ति हुई है।

(10) रंगपुर :- वर्तमान में गुजरात के काठियावाड़ जिले में मादर नदी के समीप स्थित है। इसकी खुदाई 1953-54 से रंगनाथ राव ने कराई।
यहाँ से उत्तर हड़प्पा संस्कृति का साक्ष्य मिलता है।
धान की भूसी का साक्ष्य मिला है।
कच्ची ईंटों का दुर्ग मिला है। यहां पर कच्ची ईंटों के साथ बहुत बड़ी आकार की पकी ईंटों का भी प्रयोग हुआ है।

(11) आलमगीरपुर :- यह स्थल पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हिण्डन नदी के के किनारे स्थित है।
यह स्थल हड़प्पा सभ्यता के अंतिम चरण को रेखांकित करता है। साथ ही इस सभ्यता की ज्ञात पूर्वी सीमा को भी
यहां से एक भी मुद्रा प्राप्त नहीं हुई है।
यहां से रोटी बनाने वाला चकला मिला है। यहां के मृद्भाण्ड में हड़प्पा संस्कृति के समुन्नत स्थली जैसी

Scanned with CamScanner

बहुरूपता नहीं है। बर्तनों पर मोर तथा गिलूहरी की चित्रकारी है।

(12) सुत्कगेंडोर :- यह स्थल ब्लूचिस्तान में दश्क नदी के किनारे स्थित है। इसकी खुदाई 1927 में ऑरेल स्टाइन के अधीन की गई। यहाँ से परिपक्व हड़प्पा काल का साक्ष्य मिलता है। यह इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है।

यहाँ का दुर्ग एक प्राकृतिक चट्टान पर स्थित है जिसकी दीवार में बुर्ज तथा द्वार है।

यहाँ से मनुष्य की अस्थि, राख से भरा बर्तन, ताँबे की कुल्हाड़ी, मिट्टी से बनी चूड़िया प्राप्त हुई है।

(13) कोटदीजी :- यह स्थल वर्तमान समय में पाकिस्तान में स्थित है। यह मोहनजोदड़ो से 50 किलोमीटर पूर्व से सिंधु नदी के बायें तट पर स्थित है। इसकी खुदाई 1955-1957 में आर० ए० खान द्वारा कराई गई।

यहाँ से सभ्यता के दो चरण (प्राक् तथा उन्नत हड़प्पा) का साक्ष्य मिला है।

Scanned with CamScanner